प्रवासियों से परे देखना

लेखक- सी. राजा मोहन (निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

17 दिसम्बर, 2019

"भारत को पाकिस्तान से परे हटकर ब्रिटेन साथ संबंध बनाने के उपायों पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही इसे ब्रिटेन के अंतर्राष्ट्रीय अभिविन्यास में बदलाव का लाभ उठाना चाहिए।"

यूनाइटेड किंगडम में हुए हाल के आम चुनावों में जेरेमी कॉर्बिन को मिली हार से दिल्ली को निश्चित रूप से राहत मिली होगी। कश्मीर के सवाल पर लेबर पार्टी की भारत के साथ दुश्मनी और कॉर्बिन का पाकिस्तान के प्रति राजनीतिक झुकाव, भारतीय प्रवासी के एक बड़े हिस्से के लिए समस्याएँ खड़ी कर सकती थी। जहाँ एक तरफ दिल्ली ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के रूप में बोरिस जॉनसन का स्वागत कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ इसे पता है कि कश्मीर और पाकिस्तान पर लंदन के साथ समस्याओं हो हल करने के लिए इसे इंतजार करना पड़ेगा।

सितंबर में ब्राइटन में अपने वार्षिक सम्मेलन में, लेबर पार्टी ने कश्मीर के संवैधानिक स्थान को बदलने के लिए भारत के फैसले की आलोचना करते हुए एक प्रस्ताव को मंजूरी दी थी, जिसमें कश्मीरियों के 'आत्मनिर्णय के अधिकार' और 'अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप' और दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच 'मध्यस्थता' के लिए समर्थन व्यक्त किया था। दक्षिण ब्लॉक ने प्रस्ताव पर तेजी से प्रतिक्रिया व्यक्त की और लंदन में उच्चायोग ने लेबर पार्टी में भारत के मित्रों के प्रति अपनी निराशा और अस्वीकृति व्यक्त की।

वैश्विक प्रवास रिपोर्ट 2020

- संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी संगठन द्वारा जारी की गई वैश्विक प्रवास रिपोर्ट 2020 के अनुसार विश्व में भारतीय प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक है।
- अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी संगठन के अनुसार, वर्तमान में विश्व के अनेक हिस्सों में रह रहे कुल प्रवासियों की संख्या लगभग 270 मिलियन (27 करोड़) है जो कि विश्व की कुल जनसंख्या का 3.5 प्रतिशत है।
- यह संगठन साल 2000 से विश्व भर में प्रवासन के संबंध में समझ में वृद्धि करने की दिशा में काम कर रहा है। यह संगठन इसी संदर्भ में 'विश्व प्रवासन' रिपोर्ट तैयार करता है।

जैसा कि लेबर पार्टी की चुनावी घोषणापत्र ने भारत के लिए चुनौतियाँ पेश की, उसके कुछ ही हफ्ते बाद दिल्ली को पता चला कि एक लेबर पार्टी के साथ काम करना, जिसकी सत्ता में वापसी की संभावना तब प्रबल थी, एक बड़ा सिरदर्द साबित होगा। इस बीच, ब्रिटेन में लगभग 130 भारतीय सामुदायिक संगठनों ने लेबर पार्टी का कड़ा विरोध किया और जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आए, वैसे-वैसे प्रवासी लेबर पार्टी के लिए अपनी पारंपरिक पसंद को दरकिनार करने के लिए तैयार दिखे। बोरिस जॉनसन, जो करो या मरो की राजनीतिक लड़ाई लड़ रहे थे, ने लेबर पार्टी के खिलाफ भारतीय प्रवासी की नाराजगी को दूर करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने भारतीय डायस्पोरा को आश्वस्त करने के अभियान के दौरान मंदिर गये कुछ समय व्यतित किया और अपनी सरकार के उद्देश्यों से इन्हें अवगत कराया।

भारतीयों प्रवासी ने जॉनसन के पक्ष में समग्र चुनावी नतीजों के लिए एक निर्णायक अंतर स्थापित किया या नहीं किया वो बाद की बात है लेकिन, इसमें कोई संदेह नहीं है कि लेबर पार्टी की कश्मीर नीति ने ब्रिटेन में भारतीय समुदाय को एकजुट करने में मदद की है। लगभग 1.4 मिलियन में, ब्रिटेन में प्रवासी भारतीय समुदाय सबसे बड़ा है और नागरिक जीवन

में इसका योगदान आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दशकों से लगातार बढ़ा है। लेकिन, अब यह एक मुखर बल के रूप में उभर रहा है।

दिल्ली इस चुनाव के परिणाम से प्रसन्न है, लेकिन कश्मीर और अन्य भारत-पाकिस्तान मुद्दों में ब्रिटिश भागीदारी की समस्या जल्द ही सुलझने की संभावना नहीं है। इसके समक्ष तीन समस्याएँ खड़ी हैं।

पहला, भारत चाहे या नहीं चाहे वह यूनाइटेड किंगडम में पाकिस्तान के साथ दुर्भाग्यपूर्ण रूप से प्रवासियों की संख्या की प्रतिस्पर्धा में फँस गया है। यह अमेरिका के हाल के घटनाक्रमों से बहुत अलग नहीं है, जहाँ पाकिस्तान ने भारत के कश्मीर नीति के खिलाफ अपने प्रवासियों को निर्देशित किया। पाकिस्तान के पास एंग्लो-सैक्सन दुनिया की घरेलू राजनीति में भारत के साथ अपनी प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र को बढ़ाने और गहरा करने का हर कारण हो सकता है, जहाँ दक्षिण एशियाई प्रवासी बड़ी संख्या में हैं, जो पश्चिम में अधिक व्यापक रूप से है। दिल्ली को पाकिस्तान की चालों को भांपने की जरूरत है, उसे पश्चिम और उसके घरेलू विचारों से निपटने के लिए केंद्रीय प्रतिस्पर्धा के रूप में पाकिस्तान के साथ इस प्रतियोगिता को बनाए रखने के खतरे से बचना चाहिए।

प्रवास रिपोर्ट में भारत की स्थिति

- भारत के 17.5 मिलियन (1 करोड़ 75 लाख) प्रवासी दुनिया के विभिन्न देशों में रह रहे हैं।
- भारत (78.6 बिलियन डॉलर) विश्व में विदेशों में रह रहे इन प्रवासियों द्वारा प्रेषित धन प्राप्त करने के मामले में पहले स्थान पर है। इसके बाद क्रमशः चीन (67.4 बिलियन डॉलर) तथा तीसरे स्थान पर मैक्सिको (35.7 बिलियन डॉलर) है।
- वर्ष 2018 में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी संगठन द्वारा जारी की गयी रिपोर्ट की तुलना में प्रवासियों की कुल संख्या में 0.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

दूसरा, भारतीय प्रवासी पाकिस्तानी प्रवासियों से संख्या में अधिक हैं, लेकिन दिल्ली को उन बड़े गठबंधनों के साथ तालमेल बिठाने में मुश्किल हो सकती है जिन्हें भारत की मौजूदा घरेलू नीतियों से समस्या है। नए गठबंधन मुस्लिम संगठनों और मानवाधिकार समूहों के व्यापक समुदायों के साथ पाकिस्तानी प्रवासी को बाँधते हैं। दिल्ली को पश्चिम में कई मैत्रीपूर्ण निर्वाचन क्षेत्रों को आश्वस्त करने की आवश्यकता होगी, जो भारत में हाल के घटनाक्रमों की प्रकृति के बारे में चिंतित हैं।

तीसरा, भारत ने विभिन्न मुद्दों, श्रम और रूढ़िवादी दोनों के तहत् दशकों से कश्मीर समस्या पर ब्रिटिश समस्या से निपटा है। इसे आम तौर पर लेबर सरकारों के साथ बड़ी समस्याएँ थीं। हमें यह याद होगा कि प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर के पहले कार्यकाल में, 1997 में कश्मीर पर विदेश सचिव रॉबिन कुक की हस्तक्षेप नीति ने स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ का जश्न मनाने के लिए महारानी एलिजाबेथ की भारत यात्रा को रद्द कर दिया था।

यह याद रखना उपयोगी है कि लंदन के साथ दिल्ली का सबसे हालिया राजनीतिक विवाद बोरिस जॉनसन की कंजर्वेटिव सरकार के अधीन था। यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में जम्मू और कश्मीर की संवैधानिक स्थिति को बदलने के दिल्ली के

प्रवास रिपोर्ट में अन्य देशों की स्थिति

- विदेशों में रह रहे इन प्रवासियों का अधिकांश हिस्सा यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका में रहता है।
- अमेरिका के अलावा फ्रांस, रूस, संयुक्त अरब अमीरात तथा सऊदी अरब आदि देशों में गरीब या विकासशील देशों के अधिकांश प्रवासी होते हैं।
- मध्य-पूर्व में हुए सर्वेक्षण के मुताबिक, अस्थायी प्रवासी मजदूरों की संख्या खाड़ी देशों में सर्वाधिक है।
- पिछले दो वर्षों में लगभग 4 करोड़ 13 लाख लोग केंद्रीय अफ्रीकी गणराज्य, कांगो, म्यांमार, दक्षिणी सूडान, सीरिया तथा यमन में चल रहे आतंरिक संघर्ष एवं हिंसा के कारण अपना घर छोड़ने को मजबूर हुए हैं।
- देश में आतंरिक रूप से विस्थापित हुए लोगों में पहले स्थान पर सीरिया (61 लाख), दूसरे स्थान पर कोलंबिया (58 लाख) तथा तीसरे स्थान पर कांगो (31 लाख) है।
- विश्व में शरणार्थी के रूप में लगभग 2 करोड़ 60 लाख की आबादी रह रही है। इसमें पहले स्थान पर सीरिया (लगभग 60 लाख) तथा दूसरे स्थान पर अफगानिस्तान (25 लाख) है।
- वर्ष 2018 के अंत में फिलिपींस में आए मांगखुत चक्रवात (Mangkhut Cyclone) की वजह से लगभग 38 लाख लोग विस्थापित हुए थे।

फैसले पर ब्रिटिश भूमिका से संबंधित था। हालाँकि यह समस्या दिल्ली के पक्ष में समाप्त हो गया, लेकिन संरचनात्मक समस्या निश्चित रूप से कायम रही।

दिल्ली को निश्चित रूप से कश्मीर के लिए ब्रिटिश प्रतिष्ठान के रवैये और दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच अन्य द्विपक्षीय मुद्दों पर सामरिक बदलावों पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही दिल्ली को यह भी पहचानना होगा कि कई अन्य देशों की तरह, ब्रिटेन के भी पाकिस्तान में अपने हित हैं और इसे भी उन पर प्रतिक्रिया देने के लिए दबाव का सामना करना पड़ता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी संगठन

- यह संगठन अंतरराष्ट्रीय संस्था है जो मानवीय व्यवस्थित प्रवास को सुनिश्चित करती है। यह संगठन प्रवासियों को पुनर्वास अवसरों की खोज में सहायता प्रदान करती है। इस संगठन का मुख्यालय जेनेवा, स्विट्जरलैंड में है।
- यह संगठन सरकारी, अंतर-सरकारी तथा गैर-सरकारी सहयोगियों के साथ मिलकर काम करती है। इस संगठन के 100 से अधिक देशों में कार्यालय हैं। आईओएम सभी जरूरतमंद लोगों हेतु मानवीय एवं व्यवस्थित प्रवास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित संगठन है।

अंत में ब्रिटेन के पाकिस्तान के प्रति झुकाव को बदलने के लिए भारत द्वारा प्रवासियों को जुटाना इसकी रणनीति का एक छोटा सा हिस्सा हो सकता है। यदि भारत की अर्थव्यवस्था पाकिस्तान की तुलना में लगभग 10 गुना बड़ी है और दिल्ली और लंदन के बीच साझा हितों का एक बड़ा हिस्सा है, तो निश्चित रूप से भारत पर अपने रुख पर पुनर्विचार करने के लिए ब्रिटिश प्रतिष्ठान को राजी करने के अन्य तरीके हो सकते हैं।

इसलिए, दिल्ली को अब बोरिस जॉनसन की जीत के साथ ब्रिटेन द्वारा प्रस्तुत नई संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। दिल्ली के लिए, न तो यह ब्रिटेन के साथ कश्मीर पर एक सामरिक खेल के बारे में हो सकता है और न ही यह भारत के साथ संबंधों में सुधार के लिए बोरिस जॉनसन की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के बारे में हो सकता है। भारत के लिए, यह सवाल ब्रिटेन की अंतर्राष्ट्रीय अभिविन्यास में ऐतिहासिक बदलाव (आर्थिक और राजनीतिक) का पूरा फायदा उठाने के बारे में है जो अभी सामने आने वाला है।

GS World
Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. "वैश्विक प्रवास रिपोर्ट 2020" से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी संगठन द्वारा जारी की जाती है।
2. इसके अनुसार 17.5 मिलियन भारतीय प्रवासी दुनिया के विभिन्न देशों में रह रहे हैं।
3. इस रिपोर्ट के अनुसार म्यांमार में 2018 में आए मांगखुत चक्रवात की वजह से 38 लाख लोग विस्थापित हुए थे।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3

(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements related to the Global Migration Report 2020:**

1. This report is issued by the International Migration Organization of the United Nations.
2. According to it 17.5 million Indian diaspora are living in different countries of the world.
3. According to this report, 38 million people were displaced due to the Mangkhut cyclone in Myanmar in 2018.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2 (b) 2 and 3

(c) 1 and 3 (d) 1, 2 and 3

नोट : 16 दिसम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (a) होगा।

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: 'भारत के लिए ब्रिटेन के साथ अपने संबंधों को पाकिस्तान के ऐतिहासिक संदर्भ से हटकर स्थापित करने होंगे, जिसमें बॉरिस जॉनसन का चुना जाना भारत के लिए अत्यंत लाभकारी है।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)

India needs to establish its relations with Britain away from the historical context of Pakistan, in which the selection of Boris Johnson is of great benefit to India. Analyze this statement. (250 words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।